Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 5.647, Volume 10, No. 03, July, 2020, pp. 171-174

# औरंगाबाद जिला (बिहार) में जनसंख्या (मानव संसाधन) के उपयोग एवं दुरूपयोग की समस्याः एक अध्ययन

डॉ. अभय चन्द्र चंचल*

## iLrkouk

बिहार के औरंगाबाद जिला का निर्माण सन् 1973 में पुराने गया जिला से औरंगाबाद अनुमंडल को अलग कर हुआ था जिसका संम्पूर्ण क्षेत्रफल 3302 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र गया जिला का ही भाग था। झारखण्ड राज की उतरी सिमा पार उतर पश्चिम में अर्थात दक्षिणी बिहार के दक्षिण पश्चिमी सीमा क्षेत्र में सोन नदी के पूरब उतर से दक्षिण $24^0$ 29′ से $25^0$7, उतरी अक्षांस और पश्चिम से पूरर्व $84^0$0,30′′ पु0 देशान्तर से $84^0$ 44′50′′ पूरवी देशान्त के मध्य बसे इस जिले की जनसंख्या 1981 की जनगणना के अनुसार 1237072 थी और इस क्षेत्र के जनसंख्या धनत्व 374 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमिटर था। वर्तमान में औरंगाबाद जिला का जनसंख्या 25,40,073 हैं और जनघनत्व 768 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हैं। जिसमें 90.29 प्रतिशत ग्रामीण आवादी तथा 9.32 प्रतिशत नगरीय आवादी हैं।

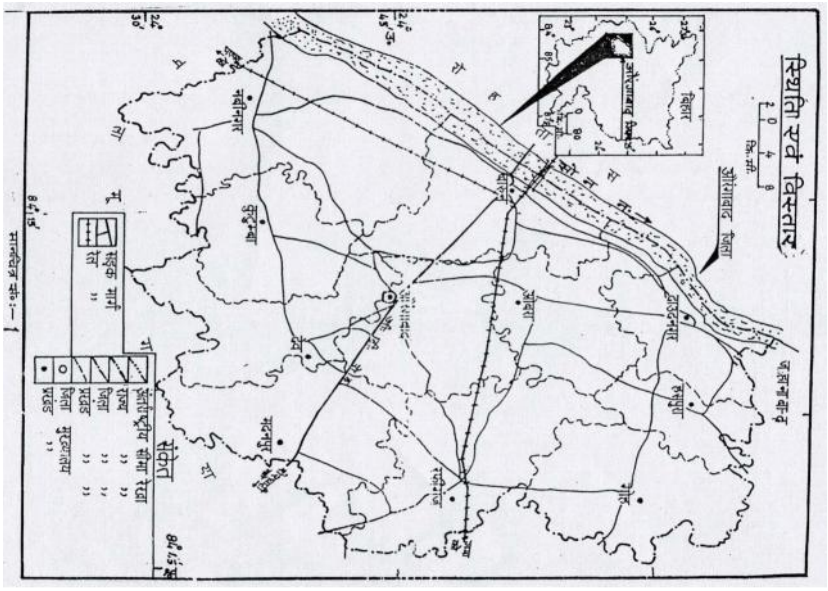


जनसंख्या एक संसाधन (मानव संसाधन) है। संसाधन भूगोल के अध्ययन में मानव संसाधन का केन्द्रीय स्थान हैं, क्योंकि प्रकृति का कोई भी पदार्थ तब तक संसाधन नही बनाता है जब तक कि मनुष्य अपनी आवश्यकता पूर्ती के लिए उसका उपयोग नही करता हैं। मनुष्य स्वयं संसाधन तथा संसाधनकर्ता भी है। मानव ने अपने निवास स्थान और भोजन प्राप्ति के लिए विभिन्न भू– भागो का उपयोग करने के साथ

* एम. ए., पीएच. डी., भूगोल विभाग म. वि. वि. बोधगया, बिहार।

ही उनके स्वरूप परिवर्तन करके उन्हें संसाधन के रूप में प्रयोग किया जाता हैं। किन्तु इस स्वरूप परिवर्तन के लिए जो तकनीक शक्ति की आवश्यकता होती है वह मानव संसाधन से प्राप्ती होती है! इस तरह इस तकनीकि शक्ति का उपयोग जनसंख्या का उपयोग हैं और इस शक्ति को जनसंख्या में विकसित नहीं करना या उसको विकसित कर उसका उपयोग नहीं करना जनसंख्या का दुरूपयोग है। स्वयं कोई वस्तु या तत्व संसाधन नहीं है, उसकी संधानता मनुष्य की आवश्यकता पूर्ती या कठिनाई निवारण करने की आंशिक या पूर्ण क्षमता में निहित है। अतः किसी भी पदार्थ या तत्व को हम संसाधन की संज्ञा तभी दे सकते हैं जब किसी भी देश काल के मनुष्य में उसके वस्तु या तत्व से कार्य साधन करने या लाभ प्राप्त करने की बौद्धिक, सांस्कृतिक और भौतिक क्षमता हो। अतः मनुष्य की क्षमता और पदार्थो की संसाधनता में धनिष्ट सम्बन्ध है। जिम्मैन एवं रितचेल के अनुसार मनुष्य का ज्ञान ही सबसे बड़ा संसाधन हैं, क्योंकि वह अन्य सभी संसाधनों की जननी हैं।

समान्यतः लोग गाचर वस्तुएँ या पदार्थ (खनिज, जल, मिट्टी आदी) को ही संसाधन मानते हैं जो निः सन्देह संसाधन हैं, किन्तु मानव का ज्ञान, इच्छा शक्ति, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सामंजस्य, राजनैतिक स्थिरता, वैज्ञानिक अभिरूची, उसका तकनिकि ज्ञान आदी अमूर्त तत्व भी मानव जगत के महत्वपूर्ण संसाधन हैं। जो जनसंख्या के गुणात्मक तत्व हैं। मानवीय (Human or Cultural Ladscape) वस्तुतः मानव के उस परिवर्तनकारी एवं विकृतिकारी सांस्कृतिक क्षमता का प्रतिफल है जिसके द्वारा प्राकृतिक वातावरण को अबतक विघमान अथवा सम्भाव्य संसाधनों का अधार मानकर स्वार्थ सिद्धि के लिए शोषण करता आया हैं। अतः संस्कृति स्वतः मानव के लिए सवाधिक प्रभावशाली संसाधन है और संसाधनों की तालीका भी हर देश काल में सांस्कृतिक बोध एवं क्षमता के अनुसार घटती एवं बढ़ती रहती हैं।

संस्कृति के निर्माता तथा प्राकृतिक संसाधनों के उत्पादक और उपभोक्ता के रूप में मानव स्वतः सर्वप्रमुख संसाधन है और यही संसाधन जनसंख्या हैं। फलस्वरूप जनसंख्या भौगोलीक वातावरण का महत्वपूर्ण तत्व और बहुमूल्य संसाधन है क्षेत्रिय प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त गत्यात्मक रहते हुए भी सांस्कृतिक संदर्भ में मनुष्योपयोगी के बिना निष्क्रिय पदार्थ जगत हैं। इसलिए जनसंख्या की सक्रियता उसके परिवेश के पदार्थ जगत तथा उसकी गतिशिलता का लाभ उटाने के लिए आवश्यक है। यह सक्रियता आदिकाल से ही मानव की जैविक, अनुवांशिकता, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतीक संगटन प्रणाली और आचरण से प्रभावित होती रहती हैं। साथ ही इस पर समाज, धर्म, संस्कृतिक एवं परम्परागत मान्यताओं का प्रभाव देखने को मिलता है। ''मानव की विद्वता एवं पदुता जिसे उसने शनैः –शनै अथक प्रयास, धैर्य, ज्ञान एवं अनुभव से अर्जित किया हैं, सकल संसाधनों का मुल है।'' नय सर्वेक्षण के अनुसार ''विश्व की प्रतिवर्ष सम्पदा वृद्धि मात्र 15 प्रतिशत प्राकृतिक सम्पदा और 85 प्रतिशत मानवकृत तकनीक, ज्ञान, अनुभव एवं प्रतिबंध सेवा आदि से उद्भूत ही रही हैं।'' यह तथ्य प्रमाणित करते हैं कि जनसंख्या एक ऐसा तत्व एवं शक्तिपूर्ण संसाधन है जिसका उपयोग में सदुपयोग या दुरूपयोग सम्भव हैं।उदाहरणार्थ भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय संग्राम की अनुवाई करने वालों के आह्वाहन पर कुछ शिक्षार्थी छात्र अपनी कक्षाओं से निकल कर देश के स्वाधीनता संग्राम में कुद पड़े। उन्होंने अपनो प्राणों की आहुति देकर भी संग्राम को सफल बनाया। उनका शैक्षणिक ज्ञान तत्व और युवा शक्ति का उपयोग देश की गुलामी की जंजीर तोड़ने की काम आयी। किन्तु आज समाज की अगुवाई करने बाले लोग उसी तरह के युवा शक्ति का उपयोग राजनौतिक पार्टियों के लिए भीड़ इकठा करने के काम में लाते हैं। इस युवा संख्या या शक्ति के लिए व्यावासायिक या व्यावहारिक उघम नही दे पाते हैं। आजादी की लड़ाई के समय युवा शक्ति का प्रयोग तो जनसंख्या का उपयोग या सदुपयोग या सदुपयोग था किन्तु आज राजनेताओं के पक्ष में केवल नारे लगााने के लिए भीड़ बनना तो मानव संसाधन की शक्ति का दुरूपयोग हैं। जनसंख्या कुछ भी करने लायक नहीं रहे तो यह और वृहद् शक्ति का दुरूपयोग हैं। जनसंख्या एक जैविक संसाधन हैं। जनसंख्या (मानव संसाधन) के समुचित संरक्षण एवं सदुपयोग की पाँच अवस्थाएँ मानी जा सकती हैं।

- परिरक्षित (पालनीय बालक) 0–6 वर्ष
- प्रशिक्षु (नवसिखिए किशोर) 7–20 वर्ष
- प्रशिक्षित (कुशल श्रमिक) 21–40 वर्ष
- प्रौढ़ (अनुभवी एवं प्रशिक्षित श्रमिक) 41–65 वर्ष
- परावलम्बी (वयोवृद्ध) 66–80 वर्ष

औरंगाबाद जिला की जनसंख्या (2001) में 0–6 वर्ष के बालको की संख्या19.80 प्रतिशत हैं। सम्पूर्ण जनसंख्या में इस उर्म के बच्चे की संख्या ग्रमीण क्षेत्र में18.26 प्रतिशत और नगरीय क्षेत्र में मात्र 1.54 प्रतिशत हैं कुल ग्रामीण जनसंख्या में 0–6 वर्ष के उम्र के बच्चे की संख्या 19.96 प्रतिशत और नगरीय जनसंख्या में17.96 प्रतिशत बालको की संख्या हैं। यह आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि कुल जनसंख्या का 19.80 प्रतिशत अभी पालन–पोषण की अवस्था में हैं।80.20 प्रतिशत लोग जिनपर पुरे जिले की व्यवस्था टिकी हैं उनमें 33.33 प्रतिशत ही कार्यशील है। इनमें 93.89 प्रतिशत कार्यशील लोग गाँव में और 6.11 प्रतिशत लोग नगर में रहते हैं। 19.80 प्रतिशत बालक हैं। और 33.33 प्रतिशत लोग कार्यशील हैं तो 53.13 प्रतिशत लोग कहीं और लगे हैं जो कार्यशील नही हैं। अर्थात् इतने प्रतिशत मानव संसाधन की शक्ति कार्यशील नही है।

देश के कुछ समंक बताते है कि 18 से 58 वर्ष की आयु के (जो अधिकांश बच्चों के पालन–पोषण का दायित्व निर्वाह करते हैं) लगभग 25 प्रतिशत लोग बेकार हैं और शेष जो रोजगार प्राप्त हैं उनमें से 92 प्रतिशत लोग असंगटित क्षेत्र में काम करते हैं, जहाँ न्यूनतम मजदुरी और सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों पर बमल नही होता। साथ ही पूरे वर्ष रोजगार की भी समस्या रहती है। अध्ययन क्षेत्र औरंगाबाद भी इन आँकड़ो की चपेट में है। 20 लाख से उपर की जनसंख्या वाले क्षेत्र (औरंगाबाद जिला) में 1069 प्राथमिक विद्यालय, 452 माध्य विद्यालय ओर 88 उच्च मा0 विद्यालय यह बताते हैं कि प्रशिक्षु भी बहुत लोग नही हो पा रहे हैं।

**तालिका–1**

**औरंगाबाद जिला में बालकों एवं श्रमिकों का प्रतिशत तालिका–1**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | कुल जनसंख्या में 0–6 वर्ष बालकों की संख्या | 19.80 |
| 2. | कुल जनसंख्या में 0–6 वर्ष बालकों की ग्रामीण क्षेत्र में संख्या | 18.26 |
| 3. | कुल जनसंख्या में 0–6 वर्ष बालकों की नगरीय क्षेत्र में संख्या | 1.54 |
| 4. | कुल जनसंख्या में 0–6 वर्ष बालकों की संख्या | 19.96 |
| 5. | कुल जनसंख्या में 0–6 वर्ष बालकों की संख्या | 17.98 |

**स्त्रोतः–** 2001 की जनगणना के आधार पर शोध छात्र द्वारा गणितिय गणना।

**तालिका–2**

**औरंगाबाद जिला की कार्यशील जनसंख्या का क्षेत्रिय रूप प्रतिशत में।**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | कुल जनसंख्या कार्यशील जनसंख्या | 33.33 |
| 2. | कुल कार्यशील जनसंख्या में ग्रमीण जनसंख्या का भाग | 93.89 |
| 3. | कुल कार्यशील जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का भाग | 06.11 |

**स्त्रोतः–** शोध छात्र द्वारा गणना।

उपरोक्त आँकड़े बताते हैं कि ग्रामीण और नगरीय दोनों क्षेत्र मिलकर जनसंख्या (मानव संसाधन) का पूर्ण उपयोग अभी औरंगाबाद जिला में नही हो पा रही हैं। कुल 33.33 प्रतिशत के अतिरिक्त लोग अव्यवस्थित स्थिति में हैं।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**


- कौशिक, एस0 डी0 एवं गौतम अल्का संसाधन भूगोल, रस्तोगीगौतम अल्का पब्लिकेशन मेरठ पृ0222.
- राव, वी0 पी0 एवं सिंह देवेन्द्र नाथ, 'जनसंख्या उवं संसाधन': सरयूपार मैदान का प्रतीक अध्ययन। उतर भारत भूगोल पत्रिका खण्ड – 20 सं01 जून 1984 पृ015.
- सिंह काशीनाथ एवं सिंह जगदिश आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, तारा पब्लिकेन्स, वाराणसी, 1976, पृ0 16.
- सिंह काशीनाथ एवं सिंह जगदीश उपरोक्त, 3. पृ0 18.
- सिंह काशीनाथ एवं सिंह जगदीश उपरोक्त, 3. पृ0 18.
- उपाध्याय आर0 एवं दिव्या उपाध्याय दिव्याः बिहार विकास की मुल्य समस्या एक भौगोलिक परिदृष्य मगध ज्योग्रफिकल रिव्य, मगध भूगोल परिषद, बोणगया, 2002, खण्ड – 2 एवं– 3, सं0 2–3 पृ0 149.
- अग्निहोत्री प्रशान्त, काम के बोझ तले दबा बचपनः कारण उवं निवारण, योजना, नवम्बर 2002, पृ0 17–18.
- Zimmermann, E.W. World Resources And Industries, Revised Eedition, Harper & Raw Publication, New York, 1951, P.-7.
- Zimmermann, E.W. Op. Cit. P.-9.


♦❐♦